विवेकी राय के साहित्य में ग्रामांचलिक जन–जीवन के चित्रण का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आनन्द गौतम
(नेट/जे.आर.एफ.)शोध छात्र, हिन्दी विभाग
पी.जी. कॉलेज गाजीपुर(वीर बहादुर सिंह पुर्वांचल विश्वविद्यालय जौनपुर, उ.प्र.)

शोध सार

विवेकी राय के साहित्य में ग्रांमाचलिक जन–जीवन का चित्रण इस विषय पर सोचने के लिए हमने विवेकी राय द्वारा लिखे उपन्यास, कहानी और निबन्ध आदि तीन विधाओं को चुना है। वास्तव में विवेकी राय की साहित्य सृजन यात्रा सन् 1961 से अर्गला नामक काव्य संग्रह से शुरू हुई। बाद में उन्होंने कहानी, उपन्यास, निबन्ध आदि लिखना शुरू किया। उन्होंने सन् 1952 में जीवन परिधि नामक प्रथम कहानी संग्रह और सन् 1967 में बबूल नामक प्रथम उपन्यास और सन् 1956 में किसानों का देश नामक प्रथन निबन्ध संग्रह लिखा। अर्थात स्वातंत्र्योत्तर कालखंड के बाद विवेकी राय के साहित्य की सृजनयात्रा शुरू होकर आज तक अविरल रूप में जारी है। काव्य से साहित्य सृजन की शुरुआत तो विवेकी राय ने जरूर की परन्तु बाद में काव्य का साथ छोड़कर वे पूरी तरह से कथा साहित्य और निबन्ध साहित्य में लिप्त हुए।

विवेकी राय एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक हैं, जिन्होंने कहानी, उपन्यास निबन्ध, रेखाचित्र, रिपोर्ताज, व्यंग्य, समीक्षा, भोजपुरी साहित्य आदि पर अत्यन्त सक्षमता के साथ कलम उठाई और अनछुए, अस्पर्शित, दूरदराज में बसे हुए ग्रामांचलिक जन–जीवन को अनुभूति और संवेदना के साथ यथार्थ रूप में उकेरने का सफल प्रयास किया है। ग्रामांचलों के उपेक्षित पात्र उनके स्वभाव विशेष उनका ज़मीदारों और जमीदारों के वंशजों द्वारा होने वाला शोषण, कृषकों की खस्ता हालत, उनके परिवारों की दयनीय स्थिति बाढ़ एवं अकाल की पीड़ा से उनकी होने वाली आर्थिक हानि आदि का चित्रण करके विवेकी राय ने जिन्दा और हू–ब–हू ग्रामांचलिक जन जीवन पाठकों के स्मृति पटल पर रेखांकित किया है।

मुख्य बिन्दु–
ग्रामांचलिक, जन–जीवन, चित्रण, सृजनयात्रा, स्वतंत्रयोतर, विधाओं, कालखंड, रिपोर्ताज, अस्पर्शित।

शोध प्रपत्र

विवेकी राय गाँव में जन्मे, गाँव की मिट्टी में पले और गाँव की भूमि से जुड़े रहे हैं। अत्यन्त कष्टमयी स्थितियों और विपत्तियों से संघर्ष करते हुए प्राइमरी स्कूल की मास्टरी से प्रोफेसर तक ये ऊर्ध्वगामी जीवन को जीकर भी वे गाँव के साथ सम्पृक्त हुए हैं। **''वे एक साथ अध्यापक, किसान और लेखक इन तीन रूपों में गाँव की सेवा करते आये हैं। वे हरदम गाँव की सोचते रहे हैं। महात्मा गाँधीजी से प्रभावित होकर वे सन् 1942 के भारत छोड़ो आन्दोलन में शरीक हुए। वृत्तपत्रा और वे पत्रिकाओं में लेखन करते रहे हैं। अत्यन्त सरल, निश्छल और सन्त प्रवृत्ति के विवेकी राय ने अपने विवेकी नाम को सार्थक किया है।''**[1]

विवेकी राय एक अध्ययनशील व्यक्ति होने के नाते उन्होंने अनेक साहित्यकारों की रचनाओं को पढ़ा है, परिणामस्वरूप इन साहित्यकारों का और रचनाओं का प्रभाव उन पर लक्षित होता है। प्रेमचन्द प्रसाद, शरतचन्द्र, दिनकर, पन्त, निराला आदि के साहित्य का उनके साहित्य पर गहरा प्रभाव लक्षित होता है। **''उदारचेता, शांत, आतिथ्यप्रिय विवेकी राय पूर्ण रूप से अराजनीतिक और प्रसिद्धि परान्मुख व्यक्ति रहे हैं। ये अपनी साँसों में भी गाँव की चिन्ता को अनुभव करने वाले अत्यन्त संवेदनशील लेखक हैं। उन पर गाँधीवाद का जितना प्रभाव है, उतना ही मार्क्सवाद का भी प्रभाव दृष्टिगोचर होता है।''**[2]

मानवतावादी विचारों से प्रेरित हुए विवेकी राय ने ग्रामांचलिक जन–जीवन की स्थिति और गति को उद्घाटित किया है। वे पुराने स्वस्थ, स्वायत्त और उदात्त ग्रामाचलिक जीवन से अधिक मोह रखते हैं। वे आधुनिक प्रभावों और विकास को भी स्वीकारते हैं लेकिन यह विकास विकृति रहित होने की अपेक्षा स्पष्ट करते हैं।

''विवेकी राय का मूल स्वर आशावादी रहा है। देवी पवित्रता में विश्वास रखते हैं। यही विश्वास उनकी रचना शक्ति का अक्षय खोत लगता है। वे सघे अर्थों में भूमि है, धरती के प्रति उनका लगाव और समर्पण ही उनकी सृजनशीलता का केन्द्र बिन्दु है। पारिवारिक आघात और हृदयरोग से पीड़ित होकर भी अवकाश प्राप्त जीवन में वे अत्यन्त निष्ठा के साथ ग्रामांचलिक जन–जीवन को अविरत रूप में उकेरते जा रहे हैं।''[3]

उनका व्रतस्थ और ऋषितुल्य व्यक्तित्व साहित्य सृजन में मन रहा है। उनकी साहित्यिक लगन को देखकर शासन और सामाजिक संस्थाओं के द्वारा उन्हें अनेक सम्मान और पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। उनके मस्तमौला स्वभाव और विश्वासी एवं सहज संस्कारशील मन ने ग्रामांचलिक साहित्य जगत् को आलोकित किया है। उनका काव्य अधिकतर आध्यात्मिक स्तर को छूने वाला रहा है। सन् 1960 के बाद उनका कवित्व रुद्ध हो गया। उनके गद्य साहित्य ने ग्रामांचलिक जन–जीवन को विशेषता पूर्वी उत्तर प्रदेश के करइल अंचल को उद्घाटित किया है। उन्होंने आज के बदलते व्यापक पुगीन ग्रामांचलिक परिवेश की विसंगतियों का मर्मस्पर्शी और विचारोत्तेजक चित्रण किया है।

स्वतन्त्रता की अर्द्ध शताब्दी के तोरण द्वार को हम पार कर चुके हैं. फिर भी हमारे ग्रामांचलों की स्थिति में कोई मूलगामी अन्तर नहीं आया है, यह उनकी कसक है। उनके विचारानुसार आर्थिक प्रतिद्वन्द्वी शहरी संस्कृति के प्रभाव ने ग्राम जीवन की शान्ति और सन्तोष की सनातन सरलता को बुरी तरह सोख लिया है। कालेधन की माया ने उन्मत्त नबंधनाढ्यों को ग्रामांचलों में जन्म दिया है। गाँव की बढ़ती हुई चट्टियाँ तस्करों के अड्डे बनी हैं। गाँव बदलने की होड़ में मुर्दा होते जा रहे हैं। इसी बदलाव की प्रक्रिया को सार्थक एवं सटीक अर्थवत्ता के साथ विवेकी राय ने दिवेच्य विधाओं में प्रस्तुत किया है। उन्होंने ग्रामांचलों के ज्वलंत प्रश्नों और समस्याओं को व्यापक रूप में युगीन, भारतीय और वैश्विक जीवन के परिप्रेक्ष्य में विश्लेषित किया है। वे ठेठ गाँव के चितेरा हैं। उन्होंने विवेच्य साहित्य विधाओं के माध्यम से ग्रामांचलिक जन–जीवन को वाणी प्रदान की है। विवेकी राय का ग्रामगंधी व्यक्तित्व उनके साहित्य में सर्वत्र छाया हुआ है।

विवेकी राय का पूरा साहित्य ग्रामांचलिक जन–जीवन की पृष्ठभूमि पर खड़ा होने के कारण हमने इस आंचलिकता और ग्रामांचलिकता की पृष्ठभूमि प्रस्तुत करके आंचलिकता और ग्रामांचलिकता के विविध पड़ाओं को उभारकर प्रस्तुत किया है, जिन पड़ाओं को पार करते–करते विवेकी राय की ग्रामांचलिक साहित्य की विकास यात्रा द्रुतगति से आगे बढ़ रही है। ग्रामाचलिकता के बीज हमें प्रेमचन्द के गोदान उपन्यास में देखने को मिलते हैं। फणीश्वरनाथ रेणु के मैला आँचल 1954, से शुद्ध आंचलिकता ने ग्रामांचलिकता, पहाड़ी आंचलिकता, नदी आंचलिकता, सागर आंचलिकता, झुग्गी–झोपड़पट्टी आंचलिकता, जन–जाति आंचलिकता आदि विविध रूप धारण किये हैं। ग्रामांचलिकता पर प्रेमचन्द के बाद रेणु नागार्जुन, भैरवप्रसाद गुप्त, रांगेय राघव, श्रीलाल शुक्ल, शिवप्रसाद सिंह, रामदरश मिश्र, विवेकी राय आदि लेखकों ने चिन्तन शुरू करके प्रगल्भ ग्रामांचलिक साहित्य का निर्माण किया है।

महात्मा गाँधी जी के देहात की ओर चलो, सही हिन्दुस्तान देहातों में बसा है इस नारे के परिणामस्वरूप आजादी के बाद ग्रामीण समाज जीवन और संस्कृति पर प्रकाश डालने का काम जोर–शोर के साथ शुरू हुआ। सन् 1960 के बाद यह धारा बलवती बनी। राजेन्द्र अवस्थी के जंगल के फूल 1960, हिमांशु श्रीवास्तव के नदी फिर वह चली 1961. राही मासूम रजा के आधा गाँव–1966, शिव प्रसाद सिंह के अलग–अलग वैतरणी 1966, श्रीलाल शुक्ल के राग।

"विवेकी राय की विवेच्य विधाओं में चित्रित ग्रामांचलों की सांस्कृतिक और सामाजिक पृष्ठभूमि चिन्तन के योग्य है। उन्होंने विवेच्य साहित्य में पूर्वी उत्तर प्रदेश के सांस्कृतिक और सामाजिक स्थितियों को विस्तार से चित्रित किया है। आर्थिक और बौद्धिक स्थितियों के कारण इसमें कुछ नये मोड़ जरूर आये हैं।"[4]

विवेकी राय ने अपने साहित्य में सांस्कृतिक पृष्ठभूमि में ग्रामांचलों के लोकगीत, लोककथा, तीज–त्योहार, उत्सव पर्व मेले, रूढ़ि–प्रथा–परम्परा, विवाह, संस्कार, मृतक संस्कार, मनोरंजन के साधन आदि का चित्रण यथार्थता के साथ किया

है। उन्होंने पूर्वी उत्तर प्रदेश के लोकगीतों को प्रस्तुत किया है। इन गीतों में मनुष्य जीवन के सभी पक्षों का प्राकृतिक सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक स्थितियों का चित्रण आया है। होली के गीत, दीपावली के गीत, विशेष पर्व के गीत, देवी–देवता के स्तुति गीत, शिव पार्वती, राम सीता सम्बन्धी गीत, खेल गीत, हल चलाते समय गाये जाने वाले गीत, खेती के काम करते समय गाये जाने वाले गीत, विवाह प्रसंग पर गाये जाने वाले गीत. विविध मेलों के अवसर पर गाये जाने वाले गीत आदि विविध रूपों में लोकगीत दिखाई देते हैं।

लोकगीतों की धुन में ग्रामांचलों की पुरानी आत्मा फुफकारने लगती है जिससे ग्रामांचल जिन्दा लगने लगता है। फसल कटाई के मौसम में गाये जाने वाले बबूल उपन्यास में और जीवित शव का अतीत कहानी में मिलते हैं। होली के गीत बबूल, सोनामाटी आदि उपन्यासों में और फागुन में बाबा देवर लागे, अवध में होरी खेलै रघुवीर, सतरंग खेलो अपना पिया संग आदि निबन्धों में दिखाई देते हैं। पुरुषों के भोजन के समय पंखा झलाते हुए गाये जाने वाले गीत बबूल और लोकऋण आदि उपन्यासों में आये हैं। देवी देवता की प्रशंसा करने वाले गीत सोनामाटी और नमामि ग्रामन् उपन्यासों में प्रस्तुत किये हैं। **''बच्चों के खेल में गाये जाने वाले गीत मंगल भवन उपन्यास में, बाप मोरे भइले कठ बपवा कहानी में, आउ रे गइया नाटी निबन्ध में मिलते हैं। फागुनी गीतों में नायिका के सौन्दर्य वर्णन के गीत, राधाकृष्ण के रंग खेलने के गीत, गोपियों के गीत, प्रभू राम के परिवार के होली गीत, नायक नायिका के शतरंज के खेल के गीत, अवध में होरी खेले रघुवीर, सतरंग खेलो अपना पिया संग आदि निबन्धों में पाये जाते हैं। लोकऋण में काँवर गीत और आप लोग कौन है इस कहानी में श्रम परिहार के गीत प्रस्तुत हुए हैं।''[5]**

लोकगीत की तर्ज पर गाये जाने वाले गीत लोकऋण के सिरताज बाबा, मंगल भवन के लाट बाबा, सोनामाटी के कवि खोरा तथा पुराने गुलाब नये गाँव कहानी के गंजेड़ी बाबा के द्वारा गाये गये हैं। श्वेत पत्र में स्वतन्त्रता आन्दोलन के लिए जनजागरण पर आधारित लोकगीत आए हैं। अफीम की बत्ती निबन्ध में आया बरखा गीत आदि लोकगीतों से के लोकमन का निर्मल आविष्कार प्रस्तुत हुआ है, इससे सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश के साथ निजी भावभीनी छटाएँ स्पष्ट होती हैं। लोकगीतों की तर्ज पर गाये जाने वाले गीत तथा हेरफार करके गाये जाने वाले गीतों से लोकगीतों की परिवर्तनशीलता स्पष्ट होती है। ये गीत ग्रामांचलों के इतिहास को भी उजागर करते हैं।

''विवेकी राय ने ग्रामांचल की नयी शिक्षित पीढ़ी को दो रूपों में चित्रित किया है। पहले प्रकार की युवा पीढ़ी नागरी आकर्षण से पीडित बाप–दादा की सम्पत्ति और सत्ता से उन्मत्त और बिगड़ी हुई है। यह युवा पीढ़ी अपनी उद्दंडता, गुंडई एवं नशापान आदि से पूरे गाँव को भ्रष्ट बनाती है।''[6] इसमें लोकऋण का आजाद, हीरा, सदानंद, सोनामाटी का मगनघोला, दिलीप, बनारसी, अच्छेलाल विजय समर शेष है का अमरेश दीपक परभू, विनोद, मंगल भवन का रणविजय, दीपककुमार टीपू, प्रेमचन्द आदि नयी पीढ़ी के प्रतिनिधि पात्रों के उदाहरण देकर विवेकी राय ने इनके भविष्य के बारे में चिन्ता प्रकट

की है। इनमें से मगनचोला विधायक (एम एल ए) बन जाता है तो विनोद जिला युवा कांग्रेस का नेता बन जाता है, ऐसी युवा शक्ति राजनीतिक पार्टियों में प्रविष्ट होकर अनेक समस्याएँ निर्माण करती है। विवेकी राय ने दूसरे प्रकार में ऐसे ग्रामीण नवयुवकों को चित्रित किया है जो अपने समाज परिवार, देश और भविष्य के प्रति प्रतिबद्धता दर्शाते हैं। श्वेत पत्र का सुरेन्द्र तिवारी, लोकऋण का सीताराम सुरेन्द्र शर्मा, समर शेष है का सुराज रामराज जयंती, मंगल भवन का सुरेश आदि नयी पीढ़ी के क्रियावान युवक लगते हैं. लेखक ने इनके प्रति आशादायी दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है। ग्रामांचलिक दलित जनजीवन की पीड़ा को भी विवेकी राय ने अपने विवेच्य उपन्यासों में वाणी दी है।

"इस दृष्टि से बबूल उपन्यास महत्त्वपूर्ण रहा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के दीनहीन मजदूर, हरिजन वर्ग की ज्वलंत समस्याओं को मानवीय दृष्टि से उन्होंने उठाया है। लोकऋण के कालिया और सीताराम इन दो भाइयों की स्थिति को भी स्पष्ट किया है। लेखक ने दलितों का शोषण, पिटाई आर्थिक दैन्य को यथार्थ रूप में चित्रित किया है। लेखक को साहित्य में दलित–चलित का भेदभाव अमान्य है फिर भी अपने साहित्य में उन्होंने दलित पीड़ा के प्रति सहानुभूति दर्शायी है और दलितों के शोषण का विरोध दर्शाया है।"[7]

ग्रामांचलों में स्थित भ्रष्ट आश्रम व्यवस्था पर विवेकी राय ने अपने उपन्यासों में करारा व्यंग्य किया है। ग्रामीणों की भावुकता और अंधविश्वास का फायदा उठाने वाले ढोगी महाराज एवं स्वामी आदि की पोल खोल दी है। समर शेष है में धनपत नगर के स्वामी गगनानन्द द्वारा लोगों को लूटना, लड़कियों को भगाना, बीचमाझा गाँव के रसगुल्ला महाराज द्वारा चमत्कार दिखाना, आश्रम में रात्रि के समय गैर कानूनी धंधे करना, सुराज का बदला लेने के लिए जानसिनगंज गाँव में समरेश बहादुर के द्वारा जनताश्रम खोलना, इसमें समरेश और उसके पुत्र अमरेश के द्वारा मार्फिया, हेरोइन की तस्करी का धंधा चलाना, सोनामाटी के कवि खोरा की कुटिया में हनुमान प्रसाद के द्वारा तस्करी का धंधा चलाना, ब्लैक से डीजल बिक्री करना, लोकऋण में सिरताज बाबा के मठ में गाँजे का खुलेआम प्रयोग करना आदि का लेखक ने खुलकर चित्रण किया है और यह दिखाया है कि ग्रामीणों की भावुकता और श्रद्धा पर खड़े ये आश्रम आज कितना हीन कर्म कर रहे हैं।

संदर्भ सूची

1. डॉ यादव श्रीमती सरोज हिन्दी के आंचलिक उपन्यासों में राजनीतिक चेतना, अन्नपूर्णा प्रकाशन, कानपुर संस्करण 1996
2. डॉ. राय विवेकी स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी कथा साहित्य और ग्राम जीवन, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद प्र. स. 1974
3. डॉ राय विवेकी आधुनिक उपन्यास विविध आयाम, अनिल प्रकाशन इलाहाबाद, प्र. सं. 1990
4. राय विवेकी आस्था और चिन्तन प्रतिभा प्रतिष्ठान दिल्ली प्र सं. 1991
5. राय विवेकी यह जो है गायत्री प्रतिभा प्रतिष्ठान, दिल्ली प्र. सं. 1991
6. राय विवेकी दीक्षा, अखिल भारतीय अन्तर जनपदीय परिषद्, उजियार प्र स. 1997
7. डॉ. राय सर्वजीत टूटते हुए गाँव का दस्तावेज, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, प्र स. 2000